महाजनपद काल - PART-2

MJC-3

5. काशी :- इसकी राजधानी वाराणसी थी। कोसल (राजधानी - श्रावस्ती) के एक राजा कंस ने काशी महाजनपद को जीता और कोसल राज्य में काशी को मिला लिया था।

आगे चलकर मगध महाजनपद के हर्यक वंश के संस्थापक बिम्बिसार ने तत्कालीन कोसल नरेश प्रसेनजित की बहन महाकोशला देवी से शादी कर ली, फलस्वरूप बिम्बिसार ने काशी प्रान्त दहेज में प्राप्त कर लिया।

6. वत्स :- इसकी राजधानी कौशाम्बी थी। छठी शताब्दी ई० पू० में यहाँ पौरव वंश के शासक उदयन का शासन था। उदयन को बौद्ध भिक्षु पिण्डोला ने बौद्ध मत में दीक्षित किया था।

वत्सराज उदयन का अवन्ति महाजनपद के तत्कालीन शासक चण्डप्रद्योत के साथ शत्रुता का भाव था, क्योंकि वत्सराज उदयन ने चण्डप्रद्योत की कन्या वासवदत्ता का अपहरण कर कौसाम्बी ले आया था और उससे शादी कर ली थी। आगे चलकर चण्डप्रद्योत ने इस शादी की स्वीकारोक्ति दी। फलतः दोनों में मैत्री सम्बन्ध स्थापित हो गया।

वर्तमान इलाहाबाद (प्रयागराज, उत्तर प्रदेश) का क्षेत्र वत्स जनपद के अन्तर्गत था।

07. अवन्ति :- अवन्ति के दो भाग थे।

छठी शताब्दी ई०पू० में यहाँ का महत्वपूर्ण शासक चण्डप्रद्योत था। पश्चिमी भारत में अवंति एक महत्वपूर्ण महाजनपद था। प्रसिद्ध बौद्ध गुरू महाकच्चायन के द्वारा चण्डप्रद्योत ने बौद्ध मत में दीक्षा ली थी।

चण्डप्रद्योत को एकबार भयंकर रूप से पाण्डु रोग (पीलिया) हो गया था, तब मगध महाजनपद के शासक बिम्बिसार ने अपने राजवैद्य जीवक को भेजकर उसका इलाज करवाया था। इस प्रकार अवंति भी मगध महाजनपद का मित्र बन गया।

08. मल्ल :- मल्ल महाजनपद के भी दो भाग थे।

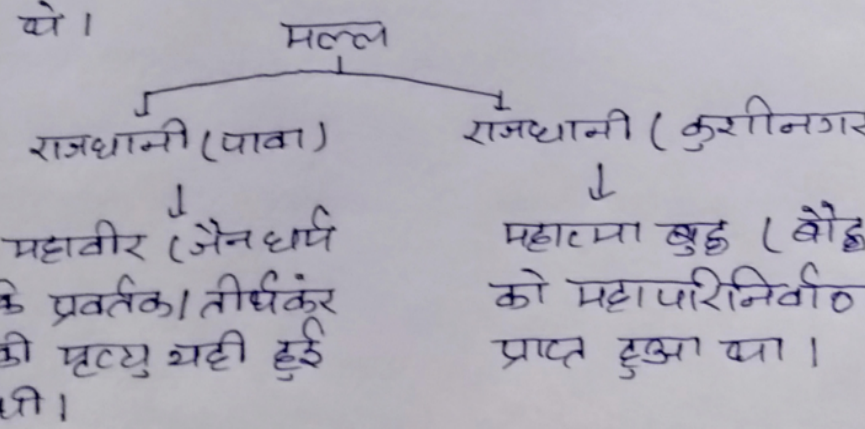

09:- कुरू :- इसकी राजधानी इंद्रप्रस्थ थी। वर्तमान दिल्ली व इसके आसपास का क्षेत्र इसके अन्तर्गत आता था। छठी शताब्दी ई०पू० में यहाँ का एक महत्वपूर्ण शासक कोरव्य था।